कसायपाहुडं भाग-1 (फोल्डर नं. 001407)

मुख्य टाइटल
विषयसूची
चित्रपरिचय
प्रकाशककी ओरसे
सम्पादकीय वक्तव्य
प्रस्तावना ---------- 1-112
1. ग्रन्थपरिचय ---------- 5-37
1. कषायप्राभृत ---------- 5-15
नाम ---------- 5
कषायप्राभृतके दोनों नामोंकी सार्थकता ---------- 6
कषायप्राभृतकी रचनाशैली ---------- 6
कषायप्राभृत और षट्खंडागम ---------- 7
कषायप्राभृत और कर्मप्रकृति ---------- 8
कषायप्राभृतकी टीकाएँ ---------- 9
यतिवृषभ के चूर्णिसूत्र ---------- 10
उच्चारणावृत्ति ---------- 10
मूलुच्चारणा ---------- 11
वप्पदेवाचार्य लिखित उच्चारणा ---------- 11
स्वामी वीरसेन लिखित उच्चारणा ---------- 11
लिखित उच्चारणा ---------- 11
शामकुण्डाचार्यकी पद्धति ---------- 12
तुम्बूलूराचार्यकृत चूड़ामणि ---------- 13
अन्य व्याख्याएं ---------- 14
जयधवला ---------- 15
2. चूर्णिसूत्र ---------- 15-25
नाम ---------- 15
रचनाशैली ---------- 15
व्याख्यान शैली ---------- 16
चूर्णिसूत्रमें अधिकार निर्देश ---------- 17-19
चूर्णिसूत्रमें ग्रन्थनिर्देश ---------- 20
चूर्णिसूत्रमें दो उपदेशपरम्परा ---------- 20
चूर्णिसूत्र और उच्चारणावृत्ति ---------- 21
चूर्णिसूत्रकी अन्य व्याख्याएं ---------- 22

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूर्णिसूत्र लऔर षट्खंडागम ---------- 22
चूर्णिसूत्र और महाबन्ध ---------- 23
चूर्णिसूत्र और कर्मप्रकृतिकी चूर्णि ---------- 24
3. जयधवला ---------- 25-37
नाम ---------- 25
इस नामका कारण ---------- 25
जयधवला सिद्धान्तग्रन्थ ---------- 27
रचनाशैली ---------- 29
जयधवलाकी व्याख्यानशैली ---------- 30
जयधवलामें निर्दिश ग्रन्थ और ग्रन्थकार ---------- 32-35
महाकर्मप्रकृति और चौबीस अनुयोगद्वार ---------- 32
संतकम्मपाहुड और उसके खंड ---------- 32
दसकरणिसंग्रह ---------- 33
तत्त्वार्थसूत्र ---------- 33
परिकर्म ---------- 34
सिद्धसेनका सम्मइसुत्त ---------- 34
तत्त्वार्थभाष्य ---------- 34
प्रभाचन्द ---------- 35
जयधवला और लब्धिसार ---------- 35
जयधवला और क्षपणासार ---------- 36-37
2. ग्रन्थकार परिचय ---------- 38-77
1-2. कसायपाहुड और चूर्णिसूत्रोंके कर्त्ता आचार्यगुणधर और यतिवृषभ
मतभेद ---------- 39
आचार्य गुणधर और उनका समय ---------- 39-43
आर्यमंक्षु और नागहस्ति ---------- 43-46
आ. यतिवृषभका समय ---------- 46-66
ग्रन्थकारोंकी आम्नाय ---------- 67-69
3. जयधवलाके रचयिता ---------- 69-77
आ. वीरसेन और जिनसेन ---------- 70
किसने कितना ग्रन्थ बनाया ---------- 71
जयधवलाका रचनाकाल ---------- 72
वीरसेन और जिनसेनका कार्यकाल ---------- 75-77
3. विषय परिचय ---------- 77-112
1. कर्म और कषाय ---------- 77-80
2. कसायपाहुडका संक्षिप्त परिचय ---------- 80-85

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. मङ्गलवाद ---------- 85-89
4. ज्ञानका स्वरूप ---------- 90-97
5. कवलाहारवाद ---------- 97-100
6. नयनिक्षेपादि विचार ---------- 100-105
निक्षेपका मुद्दा ---------- 100
निक्षेपोंके लक्षण ---------- 103
निक्षेप-नययोजना ---------- 104
7. नयनिरूपण ---------- 106-112
वस्तुका स्वरूप ---------- 106-107
पदार्थकी सामान्यविशेषात्मकता ---------- 108
धर्मधर्मिभावका प्रकार ---------- 108
नयोंका आधार ---------- 109
नयोंके भेद ---------- 111
संकेत विवरण ---------- 113-118
मूलग्रन्थकी विषयसूची ---------- 119-125
शुद्धिपत्र ---------- 126
मूलग्रन्थ (पेज्जदोसविहत्ती) ---------- 1-408
मङ्गलाचरण व प्रतिज्ञा ---------- 1-4
चन्द्रप्रभजिनको नमस्कार ---------- 1
चौबीस तीर्थंकरको नमस्कार ---------- 2
वीर जिनको नमस्कार ---------- 3
श्रुतदेवीको नमस्कार ---------- 3
गणधरको नमस्कार ---------- 3
गुणधर भट्टारकको नमस्कार ---------- 4
आर्यमंक्षु नागहस्तिको नमस्कार ---------- 4
यतिवृषभको नमस्कार ---------- 4
चूर्णिसूत्र सहित कसायपाहुडके व्याख्यानकी प्रतिज्ञा ---------- 4
मङ्गलवाद ---------- 5-9
आ. गुणधर और यतिवृषभने मङ्गल नहीं किया इसका कारण ---------- 5
कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारोंके आदिमें गौतम गणधरने मङ्गल क्यों किया.... ---------- 8
कसायपाहुडकी पहली गाथा ---------- 10-151
पहली गाथा का अर्थ ---------- 10
एक में उत्पाद्य-उत्पादकभाव ---------- 11
नामोपक्रमका समर्थन ---------- 11
शेष उपक्रमोंका समर्थन ---------- 11

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चूर्णिसूत्रोंमें उपक्रमोंका निर्देश---------- 12
उपक्रमका अर्थ ---------- 13
श्रुतस्कन्धका प्ररूपण ---------- 13
ज्ञानके पांच भेद ---------- 13
मतिज्ञानका स्वरूप और भेद ---------- 14
अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- 16
अवधिको मनःपर्ययसे पहले रखनेमें हेतु ---------- 17
अवधिज्ञानके भेद ---------- 17
मनःपर्यायज्ञानका स्वरूप---------- 19
मनःपर्यायज्ञानके भेद---------- 20
केवलज्ञानका स्वरूप ---------- 21
ज्ञानोंमें प्रत्यक्ष-परोक्ष व्यवस्था ---------- 24
श्रुतज्ञानका स्वरूप ---------- 24
श्रुतज्ञानके भेद ---------- 25
अंगबाह्यके भेद ---------- 25
अंगप्रविष्टके भेद---------- 26
दृष्टिवादके भेद---------- 26
पूर्वगतके भेद और उनकी वस्तुएं ---------- 26
आनुपूर्वीके तीन भेद---------- 27
तीनों आनुपूर्वियोंका स्वरूप ---------- 28
तीनों आनुपूर्वियोंकी अपेक्षा कसायपाहुडके योनिभूत.... ---------- 28
श्रुतके भेद-प्रभेदोंमें कसायपाहुड.... ---------- 28
नामके छह भेद ---------- 30
गौण्णपदका स्वरूप और उदाहरण---------- 31
नोगौण्यपदके उदाहरण और उसमें हेतु ---------- 31
आदानपदके उदाहरण और उसमें हेतु---------- 31
ज्ञानी आदि नाम भी आदानपद क्यों हैं---------- 32
प्रतिपक्षपदके उदाहरण और उसमें हेतु---------- 32
उपचयपदके उदाहरण और उसमें हेतु---------- 32
अचयपदके उदाहरण और उसमें हेतु---------- 33
प्राधान्यपद नामोंका अन्तर्भाव---------- 33
संयोगपदनामोंका अन्तर्भाव ---------- 33
संयोगपदनामोंका अन्तर्भाव ---------- 33
अवयपदनामोंका अन्तर्भाव ---------- 34
शूकनासा आदि नाम नहीं है, इसका खुलासा ---------- 34

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनासिद्धान्तपदनामोंका अन्तर्भाव ---------- 35
प्रमाणपदनामोंका अन्तर्भाव ---------- 35
अरविन्द शब्दकी अरविन्दसंज्ञाका अनादि.... ---------- 35
पेज्जदोसपाहुड और कसायपुड इन नामोंका....---------- 36
प्रमामके सात भेद और निरुक्ति ---------- 37
नामप्रमाण ---------- 38
स्थानप्रमाण---------- 38
संख्याप्रमाण ---------- 38
द्रव्यप्रमाण ---------- 38
मापे गये गेहूँ आदि द्रव्यप्राण क्यों नहीं है.... ---------- 38
क्षेत्रप्रमाण ---------- 39
क्षेत्रप्रमाणका द्रव्य प्रमाणमें अन्तर्भाव नहीं ---------- 39
कालप्रमाण---------- 41
कालप्रमाणका द्रव्यप्रमाणमें अन्तर्भाव नहीं---------- 41
व्यवहारकाल द्रव्य नहीं इसका समर्थन---------- 41
ज्ञानप्रमाणके पांच भेद ---------- 42
संशयादिकज्ञानप्रमाण नहीं, इसका समर्थन---------- 42
प्रमाणोंमें ज्ञानप्रमाण ही प्रधान है---------- 42
मतिज्ञानका स्वरूप ---------- 42
श्रुतज्ञानका स्वरूप और उसके दो भेद---------- 42
अवधिज्ञानका स्वरूप ---------- 43
मनःपर्ययज्ञानका स्वरूप---------- 43
केवलज्ञानका स्वरूप ---------- 43
नय, दर्शन आदिको अलगसे प्रमाण न कहनेमें हेतु---------- 43
कसायपाहुडमें कितने प्रमाण संभव है---------- 44
आगमके पद और वाक्योंकी प्रमाणताका समर्थन ---------- 44
केवलज्ञान असिद्ध नहीं है इसमें हेतु---------- 44
अवयव-अवयवीविचार---------- 45
समवायसंबन्धविचार---------- 47
मतिज्ञानादि केवलज्ञानके अंश है इसका समर्थन---------- 49
जीव अचेतनादि लक्षणवाला नहीं है इसका समर्थन---------- 52
अचेतनाका प्रतिपक्षी चेतन पाया जाता है इसमें प्रमाण---------- 52
अजीवसे जीवकी उत्पत्ति नहीं होती इसका समर्थन ---------- 54
जीव एक स्वन्त्र द्रव्य है इसका समर्थन ---------- 54
जीवको ज्ञानस्वरूप न मानकर ज्ञानकी उत्पत्ति.... ---------- 54

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्रियोंसे जीवकी उत्पत्ति माननेमें दोष ---------- 55
सूक्ष्मादि अर्थोंको न ग्रहण करनेसे जीव.... ---------- 55
केवलज्ञानका कार्य मतिज्ञानमें नहीं दिखाई देता.... ---------- 56
ज्ञानप्रमाणके वृद्धि और हानिके तरतमभावक.... ---------- 56
आवरण बलसे आव्रियमाण केवलज्ञानकी सिद्धि ---------- 56
कर्म सहेतु और कृत्रिम है, इसकी सिद्धि ---------- 56
कर्म मूर्त है इसकी सिद्धि ---------- 57
करम जीवसम्बद्ध है इसकी सिद्धि ---------- 57
कर्म से जीवको पृथक् मान लेनेमें दोष ---------- 57
अमूर्त जीवके साथ मूर्तकर्मके सम्बन्धकी सिद्धि ---------- 59
जीव और कर्मका अनादिकालसे बन्ध है इसमें हेतु ---------- 59
जीवको मूर्त माननेमें आपत्ति ---------- 59
कर्मको सहेतुक सिद्ध करके उसके कारणोंका विचार ---------- 60
कर्म जीवके ज्ञान दर्शनकानिर्मूल विनाश नहीं कर सकता, इसकी सिद्धि ---------- 61
कर्म अकृत्रिम है, अतः उसकी सन्तानका नाश नहीं हो सकता है.... ---------- 61
सम्यक्त्व और संयमादिक एकसाथ रह सकते है इसकी सिद्धि ---------- 62
सर्वदा पूरा संवर नहीं हो सकता, इस दोष का निराकरण ---------- 62
आस्रवका समूल विनाश देखा जाता है इसमें हेतु ---------- 62
पूर्वसंचित कर्मक्षयका कारण ---------- 63
स्थितिक्षयका कारण ---------- 63
प्राकारन्तरसे पूर्वसंचित कर्मक्षयका कारण ---------- 63
आवरणके नाश होने पर भी..... ---------- 63
केवलज्ञान प्राप्त अन्थको ही ग्रहण करता है... ---------- 65
केवलज्ञान एकदेशसे पदार्थोंको ग्रहण करता है.... ---------- 65
केवली अभूतार्थका कथन करते हैं इसका निराकरण ---------- 67
अरहंत अवस्थामें महावीर जिनके कितने.... ---------- 67
अघातिचतुष्क देवत्वके विरोधी है.... ---------- 68
वेदनीयकर्म घातिकर्मोंके विना फल नहीं देता इसका समर्थन ---------- 69
कवलाहार विचार ---------- 69-70
वर्द्धमान जिनके अतिशय और... ---------- 71
वर्द्धमान जिनने उपदेश कहां पर दिया इसका विधान ---------- 73
वर्द्धमान जिनने किस कालमें उपदेश दिया... ---------- 74
जिन होनेके बाद छियासठ दिन तक वर्द्धमान... ---------- 75
अन्य आचार्योंके अभिप्रायसे..... ---------- 76
आयुसम्बन्धी उक्त दोनों उपदेशोंममें से किसी.... ---------- 81

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलभागप्रमाण होते हुए भी.... 82
जिस आचार्य परंपरासे द्रव्यागम आया है उसका उल्लेख 83
समस्त अंग और पूर्वोका एकदेश गुणधर... 87
गुणधर आचार्यने प्रकृत कसायपाहुडको किस... 87
प्रकृत कसायपाहुड किस क्रमसे आचार्य आर्यमंक्षु... 88
यतिवृषभ स्थविरने उक्त दोनों आचार्योंके.... 88
चूंकि ये सब आचार्य प्रमाण हैं, अतः द्रव्यागम.... 88
द्रव्यश्रुतमें संख्याप्रमाणकी सिद्धि और.... 89
श्रुतज्ञानके पदोंकी संख्या.... 90
मध्यमपदके अक्षर 92
समस्त श्रुतके पद 92
अंगबाह्यके अक्षरोंकी गणना 93
द्वादशांगमें पदोंका विभाग 93
मूल कसायपाहुड, प्रकृत कसायपाहुड और चूर्णिसूत्रोंके पदोंकी संख्या 96
वक्तव्यताके तीन भेद 96
समस्त श्रुतमें तदुभयवक्तव्यता है.... 97
अंगबाह्यके चौदह भेद.... 97-122
सामायिकके चार भेद और उनका स्वरूप 97
चौबीस तीर्थंकर सावद्य है इस शंकाका.... 100
सुरदुन्दुभि दि बाह्य उपकरणोंके कारण... 108
नामादि स्तवोंका स्वरूप 110
वन्दनाका स्वरूप और उससे शेष जिन... 111
प्रतिक्रमणके भेद और उनका खुलासा 113
प्रत्याख्यान और प्रतिक्रमणमें भेद 115
औत्तमस्थानिकमें प्रिक्रमणका समर्थन 115
विनयके पाँच भेद 117
कृतिकर्मका स्वरूप 118
दशवैकालिक आदि शेष अंगबाह्योंके विषयका कथन 120
आचारांग आदि ग्यारह अंगोंके विषयका कथन 122-132
दिव्यध्वनिका स्वरूप परिकर्मके पांच भेद और उनके विषयका कथन 132
सूत्रके विषयका कथन 133
तीनसौ त्रेसठ मतोंका उल्लेख 134
प्रथमानुयोगके विषयका कथन 138
पूर्वगतके विषयका कथन 138
चूलिकाके पांच भेद और उनके विषयका कथन 139

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्पादपूर्व आदि चौदह पूर्वोंके विषयका. कथन ---------- 139-148
आयुर्वेदके आठ अंग ---------- 147
कसायपाहुड स्वसमयका ही कथन करता है इसमें हेतु ---------- 148
प्रकृत कसायपाहुडके पन्द्र अर्थाधिकारोंकी प्रतिज्ञा ---------- 149
ज्ञानके पांच भेदोंमेंसे श्रुतज्ञानके भेद-प्रभेद... ---------- 149
दूसरी गाथाके द्वारा कसायपाहुड़के पन्द्रह अर्थाधिकारोमेंसे किस अधिकारमें कितनी... - 151-154
मध्यमपद की अपेक्षा.... ---------- 151
मुख्य कसायपाहुड़के अनेक अधिकार हैं पर.... ---------- 152
जिस अधिकारमें जितनी गाथाए हैं उन्हें.... ---------- 152
गाथासूत्रका अर्थ ---------- 152
सूत्रका लक्षण र प्रकृत कसायपाहुड़की गाथाओंमें सूत्रत्वतकी सिद्धि ---------- 153
तीसरी गाथाके द्वारा प्रारंभके पांच अर्थाधिकारोंका नामनिर्देश ---------- 153-158
प्रारम्भके पांच अधिकारोंके विषयका कथन.... ---------- 156
गाथासूत्रके आधारसे पांच अर्थाधिकारोंके नामोंका उल्लेख ---------- 156
दूसरे प्रकारसे पांच.... ---------- 157
तीसरे प्रकारसे पांच.... ---------- 157
चौथीसे नौंवी गाथाओंके द्वारा.... ---------- 159-168
जो आचार्य दर्शनमोहकी उपशमना और... ---------- 161
अद्धापरिमाणनिर्देश नामका पन्द्रहवाँ अर्थाधिकार है इसका निराकरण ---------- 162
संयमासंयमलब्धि और.... ---------- 163
चारित्रमोहकी क्षपणा नामक अर्थाधिकारकी 28.... ---------- 168
सभाष्यगाथा इस अर्थमें जहाँ.... ---------- 169
दसवीं गाथाके द्वारा सूत्रगाथा और भाष्य गाथाओंके कहनेकी प्रतिज्ञा ---------- 170
सूत्रका लक्षण ---------- 171
ग्यारहवीं और बारहवीं गाथा द्वारा.... ---------- 177-177
तेरहवीं और चौदहवीं गाथा द्वारा.... ---------- 177-329
कसायपाहुड़में मोहनीय कर्मका कथन.... ---------- 179
कसायपाहुड़में आई हुई 233 गाथाओंका जोड़ ---------- 180
कसायपाहुडमें 233 गाथाओंके रहते हुए.... ---------- 182
प्रकृतिसंक्रमके विषयमें आई हुई... ---------- 183
180 गाथाओंसे अतिरिक्त शेष गाथाएं.... ---------- 183
यतिवृषभ स्थिवरके मतसे 15 अर्थाधिकारोंका उल्ख ---------- 184-192
अन्य प्रकारसे पन्द्रह अधिकारोंके नाम.... ---------- 185
यतिवृषभ आचार्य अपने द्वारा कहे गये... ---------- 192
प्राकारन्तरसे पन्द्रह अर्थाधिकारोंके नाम ---------- 192

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पेज्जदोसपाहुड और कसायपाहुड ये दो नाम किस अभिप्रायसे....----------197
नयका स्वरूप ----------199
नयज्ञान प्रमाणज्ञान नहीं है, इसका समर्थन----------200
सकलादेशका विवेचन----------201
विकलादेशका विवेचन ----------203
नयज्ञान प्रमाणज्ञान नहीं है इसका पुनः खुलासा----------207
सर्वथा विधिज्ञान और प्रतिषेधज्ञानका निषेध ----------208
नय अनेकान्तरूप नहीं है, इसका समर्थन----------209
वाक्यनयका स्वरूप ----------210
नयकी सार्थकता----------211
नयके भेद ----------211
द्रव्यार्थिकनयका स्वरूप और विषय----------211
पर्यायार्थिकनयका स्वरूप और विषय ----------217
द्रव्यार्थइक और पर्यायार्थिक नयके विषयमें उपयोगी श्लोक----------218
द्रव्यार्थिकनयके भेद और उनका खुलासा----------219
पर्यायार्थिकनयके भेद और उनका खुलासा ----------222
व्यञ्जनयके भेद और उनका खुलासा----------235
प्रसंगसे अर्थ और शब्दमें वाच्यवाचक भावका समर्थन ----------238
नैगमनयके भेद और उनका खुलासा----------244
सात नयोंसे अधिक नयोंके स्वीकार करनेमें कोई दोष नहीं इसका खुलासा----------245
सर्वथा एकान्तरूप ये सब नय मिथ्या हैं....----------245
वस्तु जात्यन्तररूप है, इसमें प्रमाण----------252
ये नय एकान्तसे मिथ्यादृष्टि ही नहीं हैं----------257
कसायपाहुड संज्ञा नयनिष्पन्न क्यों हैं इसमें हेतु ----------257
पेज्जदोसपाहुडसंज्ञा नयनिष्पन्न होते हुए भी....----------258
पेज्ज शब्दका निक्षेप ----------258
नैगम, संग्रह और व्यवहार इन तीन नयोंके....----------259
ऋजुसूत्र स्थापनाको छोड़ कर शेष तीन....----------262
शब्दनय नाम और भाव निक्षेपको विषय.... ----------265
नाम पेज्ज आदि चारों निक्षेपोंका स्वरूप----------269
नोकर्मतद्व्यतिरिक्त नोआगम....----------271
उपर्युक्त कथन नैगमनयकी अपेक्षा है इसका खुलासा ----------274
संग्रहादि तीन नयोंकी अपेक्षा... ----------274
भाव पेज्जका कथन....----------277
दोषका निक्षेप तथा नययोजना----------277

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोकर्म तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य दोषका कथन----------280
भावदोषके कथनके स्थगित करनेमें हेतु----------282
कषायका निक्षेप तथा नययोजना ----------283
प्रत्ययके भेद और उनका स्वरूप----------284
नोकर्म तद्व्यतिरिक्त नोआगम द्रव्य कषाय का कथन----------285
क्रोधप्रत्ययकषायका स्वरूप----------287
प्रत्ययकषाय और समुत्पत्तिककषायमें भेद ----------289
मानप्रत्ययकषायका आदिका विचार----------289
उपर्युक्त कथन नैगमादि... ----------290
ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा.... ----------290
किस समय कर्मस्कन्ध बन्ध.... ----------291
ऋजुसूत्रनय की अपेक्षा मानादि प्रत्यय....----------292
क्रोध समुत्पत्तिककषायका विचार....----------293
आठ भंगोंका प्ररूपण ----------293
मानादि समुत्पत्तिककषायोंका विचार ----------300
क्रोध आदेशकषायका विचार ----------301
आदेशकषाय और स्थापनाकषायमें भेद----------301
मानादि आदेशकषायोंका विचार----------302
उपर्युक् कथन नैगमनयकी अपेक्षा है इसका खुलासा----------303
रसकषायका विचार - सूत्रादिमें स्यात् शब्दके ....----------304
कषायमें सप्तभंगी----------308
नोकषायका विचार ----------311
उपर्युक्त कथन नैगम और संग्रहनयकी.... ----------311
व्यवहारनयकी अपेक्षा.... ----------311
ऋजुसूत्र आदिकी अपेक्षा... ----------312
नोआगमभाव क्रोधकषायका विचार----------315
नोआगमभाव मानादिकषायोंकी सूचना----------316
भाव कषायका निर्देशादि छह अनुयोगद्वारा कथन ----------317
पाहुड़का निक्षेप----------322
तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यपाहुड़के भेद----------323
नोआगमभावपाहुड़के भेद ----------323
प्रशस्त पाहुडका उदाहरण ----------324
अप्रशस्त पाहुडका उदाहरण ----------325
पाहुडशब्दकी निरुक्ति और मतान्तर----------325
अद्धापरिमाणनिर्देशके व्याख्यान करनेकी प्रतिज्ञा ----------329

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पन्द्रहवींसे लेकर बीसवीं गाथा तक छह गाथाओंद्वारा अद्धापरिमाणनिर्देशका कथन-----330-363
साकार और अनाकार उपयोगमें भेद----------331
अवग्रह ज्ञानका स्वरूप----------332
अवाय और धारणामें भेद----------332
ईहा, अवाय और धारणाज्ञानका स्वरूप----------336
मतिज्ञानसे दर्शनोपयोगमें भेद----------337
अव्यक्तग्रहण ही अनाकारणग्रहण है ऐसा मानने में दोष----------337
साकारोपयोग और अनाकारोपयोगका स्वरूप----------338
श्रुतज्ञानका स्वरूप और भेद----------340
एकत्ववितर्कविचार ध्यानका स्वरूप----------344
पृथक्त्वविचारध्यानका स्वरूप----------344
प्रतिपातसांपरायिकका स्वरूप----------345
उपशामक सांपरायिकका स्वरूप----------345
क्षपकसांपरायिकका स्वरूप----------345
संक्रामण संज्ञा किसकी है----------347
अपवर्तन संज्ञा किसकी है----------347
उपशामक और क्षपकका स्वरूप----------347
केवलज्ञान और केवलदर्शनोपयोगका अन्तर्मुहूर्त काल....----------351-360
केवल ज्ञान और केवलदर्शनोपयोगके क्रम वादकी स्थापना...----------351
केवल सामान्य और केवल विशेषका निराकरण----------353
समवायका खण्डन----------354
अन्तरङ्ग पदार्थको दर्शन और बहिरङ्ग....----------356
एक उपयोगवादकी स्थापना और उसका समाधान----------357
केवलज्ञानसे केवल दर्शनको अभिन्न माननेमें दोष----------358
केवलदर्शनको अव्यक्त माननेमें दोष----------358
केवलज्ञान अवस्थामें मतिज्ञानकी तरह केवल दर्शन भी नहीं रहता है...----------359
दर्शनका विषय अन्तरङ्ग पदार्थ मानने पर...----------360
जिनका शरीर सिंह आदिके द्वारा खाया गया है....----------361
तद्भवस्थ केवलीका काल....----------361
चारित्रमोहनीयका उपशामक कौन कहलाता है----------362
चारित्रमोहनीयका क्षपक कौन कहलाता है----------362
सूत्रका अवतार----------363-408
इक्कीसवीं गाथा द्वारा पेज्जदोषविभक्ति...----------364
इक्कीसवी गाथा का अर्थ----------364
गाथामें आया हुआ अपि शब्द चेत् इस अर्थमें लेना चाहिये इसका खुलासा----------365

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नैगम और संग्रहनयकी अपेक्षा....----------365
व्यवहारनयकी अपेक्षा....----------367
ऋजुसूत्रनयकी अपेक्षा....----------368
शब्दनयकी अपेक्षा.....----------369
गाथाके दुट्ठो व कम्मि दव्वे पियायदेको कहि वा वि....----------370
असंग्रहिक नैगमनयकी अपेक्षा....----------376
नैगमनयके दो भेद और शंका समाधान----------376
बारह अनुयोगद्वारोंके नाम----------377
उच्चारणाचार्यने पन्द्रह अनुयोगद्वार कहे हैं....----------378
सत्प्ररूपणाका पाठ सभी....----------378
सत्प्ररूपणासे नाना जीवोंकी अपेक्षा....----------379
समुत्कीर्तनानुगमका कथन----------380
सादि-अध्रुवानुगमका कथन----------381
स्वामित्वानुगमका कथन----------382-385
दोसो कस्स होदि न कह कर दोसो को होदि कहनेमें हेतु----------382
दोसो को होइ इसका क्रोधादि कषायोंमें....----------383
दोसो को होइ यह पृच्छासूत्र न होकर....----------384
कालानुगमका कथन----------385
जीवट्ठाणमें क्रोधादिक काल एक समय बताया....----------386-389
अन्तरानुगमका कथन----------389
नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयानुगमका कथन----------390
भागाभागानुगमका कथन----------392
परिमाणानुगमका कथन----------396
क्षेत्रानुगमका कथन----------398
स्पर्शनानुगमका कथन----------399
कालानुगमका कथन----------405
अन्तरानरुगमका कथन----------406
भावानुगमका कथन----------407
अल्पबहुत्वानुगमका कथन----------407
परिशिष्ट----------1-16
1. पेज्जदोसविहत्तिगयगाहा-चुण्णिसुत्ताणि ---------- 3-7
2. कषायप्राभृतगाथानुक्रम ---------- 8
3. अवतरणसूची ---------- 8
4. ऐतिहासिक नामसूची ---------- 10
5. भौगोलिकनामसूची ---------- 10

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

6. ग्रन्थनामोल्लेख ---------- 10
7. गाथाचूर्णिगत शब्दसूची ---------- 11
8. जयधवलागत विशेषशब्दसूची---------- 13-16
9. स. प्रतिके कुछ अन्य पाठान्तर---------- 16

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org